Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

M.E.S. - 111

दूरस्थ शिक्षा का विकास और दर्शन

(Growth and Philosophy of Distance Education)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Sanjay Jain*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

दूरस्थ शिक्षा का विकास और दर्शन

(Growth and Philosophy of Distance Education)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1

Question Paper—December-2022 (Solved) 1

Question Paper—Exam Held in July-2022 (Solved) 1

Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. सामाजिक-राजनीतिक मुद्दे 1
   (Socio-Political Issues)

2. शैक्षणिक विश्वसनीयता 15
   (Academic Credibility)

3. सामाजिक विश्वसनीयता और परिचालन संबंधी मुद्दे 28
   (Social Credibility and Operational Issues)

4. नए शिक्षार्थी 41
   (The New Learner)

5. दूर शिक्षा को परिभाषित करना 50
   (Defining Distance Education)

6. दार्शनिक आधार-I 63
   (Philosophical Foundations-I)

7. दार्शनिक आधार-II 73
   (Philosophical Foundations-II)

8. परिचालन संबंधी उभरती चिंताएँ 86
(Emerging Operational Concerns)

9. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य 99
(Historical Perspective)

10. अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य–I 113
(The International Scene-I)

11. अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य–II 125
(The International Scene-II)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

दूरस्थ शिक्षा का विकास और दर्शन

M.E.S.-111

(Growth and Philosophy of Distance Education)

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम भारिता : 70%*

नोट : *सभी चारों प्रश्न अनिवार्य हैं। सभी प्रश्नों की भारिता समान है।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए–

दूरस्थ शिक्षा के सन्दर्भ में वेडमेयर के 'स्वतंत्र-अध्ययन' के सिद्धांत की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-6, पृष्ठ-63, 'स्वतंत्र अध्ययन : चार्ल्स वेडेमेयर', पृष्ठ-67, प्रश्न 5

अथवा

दूरस्थ शिक्षा की उत्पत्ति (जेनेसिस) का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-10, पृष्ठ-113, 'दूरस्थ शिक्षा की उत्पत्ति', पृष्ठ-116, प्रश्न 1

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए–

दूरस्थ शिक्षा प्रभावी एवं अर्थपूर्ण शैक्षिक रणनीति है। भारतीय संदर्भ में इसकी परिचर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-3, पृष्ठ-29, 'दूरस्थ शिक्षा : एक प्रभाव और उद्देश्यपूर्ण शैक्षिक रणनीति', पृष्ठ-35, प्रश्न 5

अथवा

शिक्षा में दूरस्थ शिक्षा की सुधारात्मक आन्दोलन के रूप में परिचर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-4, पृष्ठ-47, प्रश्न 5

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) 'संवाद' (डाइलाग) और 'वैयक्तिकरण' (इन्डिविजुअलाइजेशन) के प्रकार्य के रूप में मूरे द्वारा व्याख्या की गई दूरी (डिस्टैन्स) की परिचर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-6, पृष्ठ-65, 'स्वतंत्र अध्ययन के बारे में मूर की धारणा', पृष्ठ-68, प्रश्न 6

(ख) पत्राचार शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा और मुक्त शिक्षा में अंतरों पर विशेष बल देते हुए उनकी व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-6, पृष्ठ-55, प्रश्न 1, पृष्ठ-58, प्रश्न 4

(ग) इंग्लैंड में दूरस्थ शिक्षा के विकास का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-10, पृष्ठ-114, 'इंग्लैंड' पृष्ठ-118, प्रश्न 4 (क)

(घ) अफ्रीका में दूरस्थ शिक्षा की विविध प्रणालियों की संक्षेप में परिचर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-11, पृष्ठ-125, 'अफ्रीका', पृष्ठ-141, प्रश्न 10

(ङ) दूरस्थ शिक्षा पद्धति में महत्त्वपूर्ण शैक्षिक निवेश के रूप में व्यक्तिगत सम्पर्क कार्यक्रमों (पर्सनल कन्टैक्ट प्रोग्राम्स) की भूमिका की परिचर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-3, पृष्ठ-37, 'व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रमों की उत्पत्ति'

(च) शैक्षिक पद्धति के प्रकार्य कौन-से हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-5, पृष्ठ-59, 'दूर शिक्षा का कार्यक्षेत्र'

प्रश्न 4. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए–

संजालित सहयोगी अधिगम (नेटवर्क्ड कोलैबोरेटिव लर्निंग) क्या है? भारत में दूरस्थ शिक्षा पद्धति में इसकी भूमिका की सोदाहरण परिचर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-8, पृष्ठ-91, प्रश्न 3, प्रश्न 4

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2022

(Solved)

दूरस्थ शिक्षा का विकास और दर्शन

M.E.S.-111

(Growth and Philosophy of Distance Education)

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम भारिता : 70%*

नोट : *सभी चारों प्रश्न अनिवार्य हैं। सभी प्रश्नों की भारिता समान है।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए–

शिक्षा के औद्योगीकृत रूप में दूरस्थ शिक्षा की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-7, पृष्ठ-73, 'दूरस्थ शिक्षा : ऑटो पीटर्स का शिक्षण और अधिगम का एक औद्योगिक रूप'

अथवा

शिक्षा के वैयक्तीकृत रूप में 'दूरस्थ शिक्षा' का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-6, पृष्ठ-68, प्रश्न 6

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए–

भारत में शिक्षा व्यवस्था के अपने इतिहास के विविध चरणों में इसके विकास की परिचर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-9, पृष्ठ-105, प्रश्न 3

अथवा

विकासशील देशों में दूरस्थ शिक्षा के प्रसार को अग्रसर करने वाली सामाजिक-ऐतिहासिक अनिवार्यताओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-1, पृष्ठ-12, प्रश्न 7, अध्याय-9, पृष्ठ-99, 'दूरस्थ शिक्षा का सामाजिक इतिहास'

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) सुसंगत प्रशिक्षण कार्यक्रम में नियोजन में विचारणीय आधारभूत कारक कौन-से हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-1, पृष्ठ-9, प्रश्न 5

(ख) दूरस्थ शिक्षा में 'शैक्षिक निवेश' के रूप में छात्रों की नियतकार्य-प्रतिक्रियाओं (असाइनमेंट रिसपॉन्सेज) की परिचर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-3, पृष्ठ-31-32, प्रश्न 5

(ग) उद्योग में गुणवत्ता आश्वासन और दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता आश्वासन में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-8, पृष्ठ-89, प्रश्न 3

(घ) शिक्षार्थी-केन्द्रितता (लर्नर सेन्टर्डनेस) के संदर्भ में परंपरागत शिक्षा की तुलना में दूरस्थ शिक्षा की परिचर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-5, पृष्ठ-56, प्रश्न 3

(ङ) चीन और कोरिया गणराज्य में दूरस्थ शिक्षा शिक्षा संव्यवहारों की विशिष्ट विशेषताएं कौन-सी हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-11, पृष्ठ-125, 'चीन', पृष्ठ-126, 'कोरिया गणराज्य'

(च) उत्तरी अमेरिका में दूरस्थ शिक्षा पद्धतियों में 'शिक्षार्थी स्वायत्तता' (लर्नर ऑटोनोमी) का संव्यवहार किस प्रकार होता है?

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-6, पृष्ठ-63, 'शिक्षार्थी की स्वायत्तता'

प्रश्न 4. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए–

सामाजिक-आर्थिक परिप्रेक्ष्य से आप दूरस्थ शिक्षा के बारे में क्या सोचते हैं? दूरस्थ शिक्षा व्यवसायी (प्रैक्टिशनर) के रूप में अपने अनुभव लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें-अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'परिचय, पृष्ठ-2, प्रश्न 1, पृष्ठ-8, 'शिक्षा में सामाजिक-आर्थिक असमानता', अध्याय-8, पृष्ठ-86, 'आर्थिक तर्क', पृष्ठ-92, प्रश्न 6

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

दूरस्थ शिक्षा का विकास और दर्शन
(Growth and Philosophy of Distance Education)

सामाजिक-राजनीतिक मुद्दे
(Socio-Political Issues)

1

परिचय

'दूरस्थ शिक्षा' और 'मुक्त शिक्षा' शब्द वर्तमान में पूरी दुनिया में शैक्षणिक क्षेत्रों में प्रचलित विषय हैं। जनवरी 1998 तक 103 राष्ट्रीय और 1117 अलग-अलग प्रकार और आकार के दूरस्थ और खुले शिक्षण संस्थान थे। साथ में, ये संस्थान दुनिया के आठ अलग-अलग क्षेत्रों के 30 मिलियन छात्रों तक उपलब्ध हैं। दूरस्थ शिक्षार्थियों के लिए कुल 34,000 पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। हालांकि विभिन्न क्षेत्रों और संदर्भों में प्रदान किए जाने वाले दूरस्थ शिक्षा (पहले पत्राचार के रूप में जाना जाता था) कार्यक्रमों की व्यावहारिकता, व्यवहार्यता, वैधता और गुणवत्ता के बारे में चिंताएं हैं।

दूरस्थ शिक्षा की लगातार जांच की जा रही है। सांस्कृतिक और बौद्धिक पूर्वाग्रहों को एक प्रभावी सुधारात्मक पद्धति के रूप में दूरस्थ शिक्षा को हमारी स्वीकृति और बढ़ावा देने के लिए सामाजिक-राजनीतिक औचित्य की आवश्यकता है। हमने दूरस्थ शिक्षा की सुधारात्मक क्षमता के लिए सामाजिक-राजनीतिक तर्क प्रदान करने के लिए केस स्टडी का उपयोग किया। पहले दो खंड भारत में अंग्रेजी भाषा शिक्षण (ईएलटी) और शिक्षक प्रशिक्षण पर केंद्रित होंगे। भारत में विभिन्न स्तरों पर अंग्रेजी भाषा के अधिकांश शिक्षक दशकों के प्रयासों के बावजूद अप्रशिक्षित हैं। इसके बजाय हम ईएलटी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों पर सामाजिक-सांस्कृतिक प्रतिबंधों का पता लगाएंगे। हम दो महत्त्वपूर्ण संस्थागत मुद्दों का पता लगाएंगे–

1. 'संख्या' का मुद्दा, जिसे प्रशिक्षण की आवश्यकता है, जिसका विस्तार होता रहता है।
2. प्रशिक्षण कार्यक्रमों की 'प्रासंगिकता'।

अध्याय का विहंगावलोकन

संख्या की समस्या

प्रशिक्षित करने की आवश्यकता वाले शिक्षकों की अगणित बड़ी संख्या के विषय में आने से पहले हम भारत में विशेषीकृत शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के इतिहास पर शीघ्रता से चर्चा करेंगे।

प्रथम अंग्रेजी भाषा शिक्षण संस्थान (ईएलआई) की स्थापना 1954 में इलाहाबाद में हुई थी, जबकि राजस्थान में स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ लैंग्वेज स्टडीज 1966 में स्थापित होने वाला अंतिम प्रमुख ईएलटीआई था। इस बीच देश के विभिन्न क्षेत्रों में 8 अन्य संस्थानों की स्थापना की गई थी।

1978 तक राष्ट्र ने 4,00,000 शिक्षकों की अनुमानित आबादी के 26% के करीब को प्रशिक्षित किया, यह मानते हुए कि ELTIS, RIES और CIEFL में प्रदान किया गया प्रशिक्षण राष्ट्र की आवश्यकताओं के लिए प्रासंगिक है और प्रभावी है यानी कुल कार्य का सिर्फ 26% राष्ट्रीय प्रयास से किया गया था।

विशेषज्ञ संस्थानों की संख्या बढ़ाना

यह तुरंत स्पष्ट किया जाना चाहिए कि मौजूदा ईएलटीआईएस की क्षमताओं का विस्तार करना ईएलटीआईएस की कुल संख्या के विस्तार के बराबर है। दोनों प्रोग्रामर की मौलिक अवधारणा यह है कि शिक्षक प्रशिक्षण की पहल सफल होने के लिए, शिक्षकों को शिक्षित करने की क्षमता को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता वाले शिक्षकों की संख्या में मौजूद वृद्धि के अनुपात में वृद्धि होनी चाहिए। आइए, बजटीय प्रावधानों में वृद्धि के प्रारंभिक अनुमान की गणना करें, जो ऊपर बताई गई मांगों को पूरा करने के लिए आवश्यक होगा।

भारत में चार गुना वृद्धि के लिए बजटीय प्रावधान में पूरे शैक्षिक कार्यक्रम का केवल एक हिस्सा अर्थशास्त्र के आधार पर उच्च शिक्षा में 'सामाजिक कवर निवेश' के स्तर को ध्यान में रखते हुए उचित ठहराया जा सकता है।

निष्कर्ष यह है कि यह आर्थिक रूप से अक्षम होगा, इसलिए पहले से मौजूद प्रशिक्षण केंद्र या अधिक बनाने के लिए पारंपरिक प्रशिक्षण के तरीके द्वारा उनका उपयोग शिक्षक प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए उनका विस्तार करना असंभव है। तथ्य यह है कि केवल एक नई ईएलटीआई की स्थापना 1966 से महत्त्वपूर्ण रूप से की गई है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

'गुणक प्रभाव' का संचालन

शब्द 'गुणक प्रभाव' केवल इस तथ्य को संदर्भित करता है कि शिक्षकों की एक छोटी संख्या या अन्य ठीक से प्रशिक्षित कर्मचारी धीरे-धीरे बड़ी संख्या में सहकर्मियों द्वारा प्रशिक्षित होंगे, जिसके परिणामस्वरूप विचाराधीन पूरे समूह का अंतिम प्रशिक्षण बिना किसी अतिरिक्त बजटीय या भौतिक बुनियादी ढांचे की जरूरतों को प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा पूरा किया जा रहा है।

प्रासंगिकता की समस्या

भारत में शिक्षक-प्रशिक्षण का वर्तमान 'विचार' 'प्रासंगिकता' की समस्या है।

शिक्षक शिक्षा का विचार जो वर्तमान में है, विशेषज्ञों द्वारा प्रचारित ब्रिटिश शिक्षा का अवशेष है, उसे भारत ने छोड़ने की हिम्मत नहीं की है। मानक प्रक्रिया अभी भी वही है, जिसे 'शिक्षक-प्रशिक्षण वर्ष' में ब्रिटिश विश्वविद्यालयों द्वारा उपयोग किया जाता था यानी एक विशिष्ट प्रथम डिग्री प्रोग्राम है, जिसका विषय शिक्षण भाषाओं से संबंधित नहीं है।

इस बात पर प्रकाश डाला गया कि भारतीय स्नातक इस तथ्य से बाधित हैं कि अंग्रेजी उनके लिए एक विदेशी भाषा है, ब्रिटिश स्नातक अपनी मातृभाषा सिखाने के लिए प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। जब ईएलटीआई और इसी तरह के अन्य विशेष संस्थानों की बात आती है, तो कहानी समान होती है। इन संस्थानों के कर्मचारी या तो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से 'संसाधन-देशों' (जैसे इंग्लैंड) के संपर्क में हैं, जो भारत या किसी अन्य विकासशील राष्ट्र में अंग्रेजी पढ़ाने की अनूठी कठिनाइयों को दूर करने के लिए पूरी तरह से तैयार नहीं हैं।

प्रासंगिक प्रकार के प्रशिक्षण कोर्स

1976 में पत्राचार के माध्यम से सीआईईएफएल द्वारा प्रस्तावित अंग्रेजी शिक्षण में स्नातकोत्तर प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम (पीजीसीटीई) में नामांकित 246 सेवाकालीन शिक्षकों के समूह में प्रत्येक दूसरे शिक्षक और एक समूह में प्रत्येक चौथे शिक्षक को एक प्रश्नावली भेजी गई थी।

एक प्रासंगिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की आवश्यकता है

सामान्य पाठ्यक्रम में नामांकित शिक्षकों के बीच विभिन्न प्रकार के प्रोत्साहन हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, स्नातकोत्तर विभागों के कर्मचारियों ने शुद्ध जिज्ञासा से पाठ्यक्रम में दाखिला लिया हो सकता है या यह संभव है कि उनके विभागों ने एक पाठ्यक्रम की पेशकश की, जिसमें कुछ भाषाविज्ञान या ध्वन्यात्मकता शामिल थी, जिसे वे इन प्रशिक्षणों के माध्यम से उजागर करना चाहेंगे।

एक प्रासंगिक प्रशिक्षण कार्यक्रम : बुनियादी विचार

इसमें विश्वविद्यालय की शुरुआत से ही संभावित विदेशी भाषा शिक्षक को अपनी नौकरी के लिए प्रतिबद्ध करना शामिल है, जैसे डॉक्टर या इंजीनियर जो अध्ययन करते हैं, केंद्र में 'अभ्यास' के साथ सैद्धांतिक और व्यावहारिक पाठ्यक्रम। हालांकि अच्छी तरह से प्रशिक्षित शिक्षक वांछनीय हैं, शिक्षक प्रशिक्षण को आदर्श बनाना यथार्थवादी नहीं हो सकता है, जो लागत और समय से अधिक गुणवत्ता को महत्त्व देता है, हमारे छात्र ज्यामितीय विकास इस विचार के खिलाफ एक मजबूत प्रमाण हैं, जिनमें देश के कुछ विशेष संस्थान 'जमीनी प्रशिक्षण को असंभव बनाते हैं।

अन्य विकासशील देशों में संख्या एवं प्रासंगिकता

योग्य शिक्षा भारत से कहीं अधिक प्रभावित करती है, जिसकी जनसंख्या लगभग 1 बिलियन है। विकासशील दुनिया के छोटे देशों को भी इस मुद्दे से निपटना चाहिए, खासकर जब उन्हें तत्काल शैक्षिक उत्तर की आवश्यकता होती है, लेकिन इसके लिए पर्याप्त धन नहीं होता है। विकासशील देशों ने जनसंख्या और भौगोलिक क्षेत्र के संदर्भ में अपने आकार की परवाह किए बिना अपनी शैक्षिक और विकास संबंधी मांगों को पूरा करने के लिए दूरस्थ शिक्षा समाधानों की ओर रुख किया है।

उदाहरण के लिए, भारत और अन्य विकासशील देशों की तुलना में मॉरीशस एक छोटा देश है। एक मजबूत अर्थव्यवस्था होने के बावजूद मॉरीशस ने अपने लोगों को शिक्षित करने में ज्यादा प्रगति नहीं की है। लगातार तीन औपनिवेशिक सरकारें यानी डच, फ्रांसीसी और ब्रिटिश ने मॉरीशस पर अपनी छाप छोड़ी है। नतीजतन, द्वीप राष्ट्र को अपनी शैक्षिक प्रणाली को इन विरासतों के साथ-साथ वर्तमान शिक्षित अभिजात वर्ग से मुक्त करना चाहिए, जिसने समय अवधि के आधार पर या तो फ्रांस या ब्रिटेन या दोनों से उच्च शिक्षा प्राप्त की। हालांकि अधिकांश को शिक्षित करने का प्रयास किया गया है।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. 'गुणक प्रभाव' को अपने स्वयं के अनुभव एवं ज्ञान के उदाहरण के साथ परिभाषित करें।

उत्तर–शब्द 'गुणक प्रभाव' सरल अवधारणा को संदर्भित करता है कि अपेक्षाकृत कम संख्या में शिक्षक या कोई भी कर्मचारी जो उचित रूप से प्रशिक्षित किया गया है, अपने सहयोगियों की एक बड़ी संख्या को चरणों में प्रशिक्षित करेगा, और परिणामस्वरूप, पूरे समूह में प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा प्रदान किए जाने वाले अतिरिक्त वित्तीय प्रावधानों या बुनियादी ढांचे की आवश्यकता के बिना प्रशिक्षित किया जाएगा। काफी समय पहले से, अधिकांश ईएलटीआई, सहित सीआईईएफएल संभावित उत्तर के रूप में गुणक प्रभाव पैदा करने के विचार के साथ प्रयोग कर रहा है। यह अनुमान लगाया गया था कि बड़े पैमाने पर शिक्षकों को पढ़ाने के लिए निस्संदेह नवीन प्रशिक्षण विधियों की आवश्यकता होगी और इन विधियों को 'पिरामिड' के रूप में व्यवस्थित किया जा सकता है अर्थात् एक व्यापक प्रशिक्षण,

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

जो कम से कम एक शैक्षणिक वर्ष तक चलता है, अपेक्षाकृत सीमित संख्या में व्यक्तियों को दिया जाना चाहिए, जिनकी सेवाओं का बाद में प्रशिक्षण शिक्षकों के लिए उपयोग किया जाता है। ये व्यक्ति तब तक इस प्रक्रिया को जारी रख सकते हैं, जब तक कि सभी शिक्षक जो अभी तक प्रशिक्षित नहीं हैं, प्रशिक्षित नहीं हो जाते। 'गुणक प्रभाव' वाले विशिष्ट संस्थानों में प्राप्त प्रशिक्षण की यह अवधारणा पर आधारित निम्नलिखित तीन धारणाएँ हैं–

***(i)* वे शिक्षक जो वास्तव में पढ़ा रहे हैं**–कक्षाएँ अपने प्रदर्शन में सुधार कर सकती हैं, यदि उनके पास उस प्रशिक्षण की प्रकृति की परवाह किए बिना किसी प्रकार के प्रशिक्षण तक पहुँच हो, उन्हें 'प्रशिक्षित' की उपाधि अर्जित करनी होगी और अपने चुने हुए क्षेत्र में सक्षम होने के लिए बस इतना ही आवश्यक है।

***(ii)* गहन प्रशिक्षण**–एक विशेष ईएलटी में वर्ष, जैसे कि सीआईईपीएल, प्रशिक्षु द्वारा लिए गए पाठ्यक्रमों के विषय वस्तु के प्रशिक्षु की विशेषताओं की परवाह किए बिना, एक प्रशिक्षु को हमेशा एक शिक्षक प्रशिक्षक में बदल देता है।

(iii) वांछित 'गुणक प्रभाव' प्राप्त करें।

प्रश्न 2. अपने देश/राज्य/पड़ोस में दिए जा रहे एक कार्यक्रम/पाठ्यक्रम की पहचान करें जो संख्याओं के मुद्दे पर प्रकाश डालता है जैसा कि बराबर 3.6 में चर्चा की गई है)।

आपके देश/राज्य ने शिक्षा के लिए बढ़ती छात्र संख्या के संदर्भ में बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए कौन से विभिन्न उपाय अपनाए हैं?

उत्तर–ऐसा प्रतीत होता है कि इस समस्या के तीन संभावित समाधान हैं–

(i) देश में ईएलटीआईएस की संख्या में वृद्धि करना।

(ii) मौजूदा ईएलटीआईएस में संसाधन व्यक्ति तैयार करना और 'गुणक प्रभाव' के लिए उनकी सेवाओं का उपयोग करना।

(iii) पूरे देश में शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए दूरस्थ शिक्षा की तकनीकों को नियोजित करना। विशेषज्ञ संस्थानों की संख्या बढ़ाना।

यह अनिवार्य है कि सभी के ध्यान में लाया जाए कि मौजूदा ईएलटीआईएस की क्षमताओं को बढ़ाना ईएलटीआई की कुल संख्या बढ़ाने के बराबर है। इन दोनों कार्यक्रमों के पीछे मुख्य विचार यह है कि शिक्षक शिक्षा में सुधार की पहल के प्रभावी होने के लिए, शिक्षकों के लिए उपलब्ध शैक्षिक अवसरों की संख्या को उन शिक्षकों की कुल संख्या में वृद्धि के प्रत्यक्ष अनुपात में बढ़ने की आवश्यकता है, जिन्हें शिक्षित करने की आवश्यकता है। इस मामले में, नए संस्थानों को धरातल पर उतारने या मौजूदा लोगों का विस्तार करने के लिए किस तरह के वित्त की आवश्यकता है? आइए बजटीय प्रावधानों में वृद्धि की एक मोटे तौर पर गणना करते हैं।

प्रशिक्षित करने की आवश्यकता वाले शिक्षकों की अगणित बड़ी संख्या के विषय में आने से पहले हम भारत में विशेषीकृत शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के इतिहास पर शीघ्रता से चर्चा करेंगे।

प्रथम अंग्रेजी भाषा शिक्षण संस्थान (ईएलआई) की स्थापना 1954 में इलाहाबाद में हुई थी, जबकि राजस्थान में स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ लैंग्वेज स्टडीज 1966 में स्थापित होने वाला अंतिम प्रमुख ईएलटीआई था। इस बीच देश के विभिन्न क्षेत्रों में 8 अन्य संस्थानों की स्थापना की गई थी। निम्न तालिका में वर्ष के अनुसार एक क्रम प्रदान किया गया है–

तालिका 1: विशेषज्ञ संस्थान : वर्षवार विवरण

वर्ष	संस्थानों की संख्या
1956	1
1958	1
1962	1
1963	3
1964	1
1965	2
1966	1

तालिका 1 से पता चलता है कि सभी दस संस्थानों की स्थापना 1956 और 1966 के बीच दस साल की अवधि के भीतर की गई थी। 1966 के बाद से केवल एक जोड़ा गया है। 1998 से देश में केवल 11 ऐसे संस्थान संचालित हैं। यह रुख बहुत जल्द बदलने की संभावना नहीं है। विशिष्ट संस्थानों का उद्देश्य उपलब्ध मानव संसाधनों को बढ़ाना और उनका आधुनिकीकरण करना था, जब वे पहली बार स्थापित हुए थे। हम यह देखने के लिए जाँच करेंगे कि क्या इस लक्ष्य को अभी प्राप्त कर लिया गया है। हम अपनी बहस (1978) शुरू करने के लिए CIEFL की प्राथमिकताओं और रणनीतियों पर पूरक नोट से उद्धृत करते हैं। (1998 में, स्थिति में इतना बदलाव नहीं आया है।)

(i) राष्ट्रव्यापी माध्यमिक और माध्यमिक विद्यालयों में अंग्रेजी शिक्षकों की अनुमानित संख्या (टाइम्स ऑफ इंडिया डायरेक्टरी और ईयर बुक, 1978 में सूचीबद्ध उच्च विद्यालयों और मध्य विद्यालयों की संख्या के आधार पर)	4,00,000
(ii) शिक्षक, जिन्होंने ईएलटीआईएस/आरआईईएस में नियमित पाठ्यक्रम पूरे कर लिए हैं	10,610
(iii) ईएलटीआईएस द्वारा उनके अभियान केंद्रों/लघु पाठ्यक्रमों के माध्यम से प्रशिक्षित शिक्षक	1,02,926

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

(iv) शिक्षक जिन्होंने CIEFL में नियमित पाठ्यक्रम पूरा कर लिया है और संसाधन लोगों के रूप में उपयोग किया जा सकता है	925
(v) सीआईईएफएल ने अल्पकालिक पाठ्यक्रमों के लिए प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित किया	1,044

इस जानकारी को संक्षेप में निम्नानुसार किया जा सकता है–

(i) शिक्षकों की कुल संख्या, जिन्हें प्रशिक्षित किया जाएगा	4,00,000
(ii) ELTIS, RIES और CIEFL में नियमित प्रशिक्षण पूरा करने वाले शिक्षकों की कुल संख्या–उपरोक्त *(ii+iv)*।	11,535 (10,610+925)
(iii) अभियान केंद्रों, विस्तार सेवाओं और लघु पाठ्यक्रमों के माध्यम से प्रशिक्षित शिक्षकों की संख्या: *(iii+v)*	1,03,970 (1,02,926+1,044)
(iv) 1978 तक प्रशिक्षित शिक्षकों की कुल संख्या	115,505 (11535+103,970)

मान लीजिए कि इस सदी के अंत तक, अंग्रेजी पढ़ाने वाले सभी लोगों को कुछ न कुछ शिक्षा का प्रकार मिल जाने की उम्मीद है–

(i) 1978 और 1999 के बीच पारित 21 वर्ष और

(ii) 400,000 शिक्षक जो 1978 में ईएलटी में काम कर रहे थे।

1999 ईस्वी में 400,000 प्रशिक्षक होंगे यदि वृद्धि की दर 20% प्रति सात वर्ष स्थिर रहती है $[1+20/100]^{21/7}$ यानी 692,000। इन शिक्षकों में से 115,505 पहले शिक्षकों की संख्या है, जिन्हें प्रत्येक वर्ष प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है–6,92,000 – 115,505, जो 576,495/21 के बराबर है या यह कि 27,452 शिक्षकों का शैक्षणिक बुनियादी ढांचा है। इसके अलावा 15 वर्षों की अवधि (1963 से 1978 तक) में एक वर्ष में प्रशिक्षित किए गए प्रशिक्षकों की संख्या 115,505/15=7,700 है। यह उत्तोलन संख्या है (ऊपर देखें)। संक्षेप में, 1999 तक प्रत्येक वर्ष 27,452 शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए बजट में आवंटन को मोटे तौर पर साढ़े तीन गुना बढ़ाना होगा (27,452/7,700)।

यदि कोई भारत में 'उच्च शिक्षा में सामाजिक कवर निवेश' की डिग्री को ध्यान में रखता है, तो पूरे शैक्षिक कार्यक्रम के केवल एक वर्ग के लिए बजटीय आवंटन में चार गुना वृद्धि के लिए आर्थिक औचित्य मिल सकता है। यह औचित्य अर्थशास्त्र के दायरे में पाया जा सकता है।

निष्कर्ष एक परिणाम की ओर ले जाते हैं कि यह आर्थिक रूप से अस्थिर होगा और इस प्रकार मानक प्रशिक्षण विधियों का उपयोग करके शिक्षक प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए पहले से मौजूद प्रशिक्षण केंद्रों का विस्तार करने या उनमें से अधिक का निर्माण करने का प्रयास करना असंभव होगा।

तथ्य यह है कि 1966 के बाद से निम्नलिखित कारणों से केवल एक नया ईएलटीआई स्थापित किया गया है, जो उपयोगकर्ता संस्थानों के समर्थन में साक्ष्य का एक महत्त्वपूर्ण अंश है।

'गुणक प्रभाव' का अपने पक्ष में उपयोग करना

शब्द 'गुणक प्रभाव' केवल इस तथ्य को संदर्भित करता है कि शिक्षकों की एक छोटी संख्या या अन्य उचित रूप से प्रशिक्षित कर्मचारी धीरे-धीरे बड़ी संख्या में अपने सहकर्मियों को प्रशिक्षित करेंगे, जिसके परिणामस्वरूप पूरे समूह को अतिरिक्त वित्तीय या भौतिक बुनियादी ढांचे की आवश्यकता के बिना अंतिम प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा इस घटना को 'आभासी' या 'बाहरी' गुणक प्रभाव के रूप में जाना जाता है।

काफी समय से CIEFL सहित अधिकांश ELTIs गुणक प्रभावों को स्थापित करने के लिए एक तंत्र पर अनुसंधान और विकास कर रहे हैं। यह सोचा गया था कि बड़े पैमाने पर शिक्षक प्रशिक्षण के लिए नई प्रशिक्षण विधियों की आवश्यकता होगी, और इसे 'पिरामिड' नामक ढांचे के माध्यम से पूरा किया जा सकता है। कहने का मतलब यह है कि बहुत ही चुनिंदा लोगों को जिनकी सेवाओं को बाद में शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए नियोजित किया जाता है, उन्हें कम से कम एक शैक्षणिक वर्ष के लिए शिक्षक-प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए गहन प्रशिक्षण से गुजरना चाहिए। यह प्रशिक्षण विशेष रूप से शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए तैयार किया जाना चाहिए। ये व्यक्ति उन सभी प्रशिक्षकों को पढ़ाने के लिए प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में सक्षम हैं, जो वर्तमान में अप्रशिक्षित हैं। 'गुणक प्रभाव' वाले विशेष संस्थानों द्वारा प्रदान किए जाने वाले प्रशिक्षण की यह अवधारणा उन तीन परिसरों पर टिकी हुई है, जिनकी रूपरेखा दी गई है–

(i) यदि प्रशिक्षक किसी भी तरह का प्रशिक्षण प्रकार तक पहुँचते हैं, तो वास्तविक रूप से उनके प्रदर्शन में सुधार करने के लिए

कक्षा सेटिंग्स में उन्हें केवल स्तरीय प्रशिक्षित करने की जरूरत है और वह अपने आप में उन्हें उस काम में निपुण बनाएंगे, जो वे करते हैं।

(ii) प्रशिक्षु के व्यक्तिगत लक्षणों या प्रशिक्षण में शामिल विषय वस्तु की परवाह किए बिना, एक विशेष ELTI, जैसे CIEFL में 'पूर्ण' प्रशिक्षण का एक वर्ष पूरा करने के बाद एक

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com